रात्री क्लास, ओम शान्ति 23-11-67

बच्चे जानते है कि अबी हम कचचे है ज्ञान और योग में। पक्के होगे पिछाड़ी में। जब तक बड़ा इमतिहान पास ना करे तो नीचे वाले कच्चे ही ठहरे। जब कर्मातीत अवस्था हो तब पक्के कहे जायें। नहीं तो सब कच्चे है। माला भी नम्बर वार 108 की बनती है। 8पक्के बाकी सब 100कहेगे कच्चे नम्बरवार। कर्मातीत अवस्था पास आनर वो सिर्फ 8 होते है। बाकी कच्चे कहते कितने कच्चे बन जाते है। पढ़ाई पूरी होगी तब रिज़ल्ट निकलेगे। बहुत थोड़े बाकी कच्चे। कच्चे को सिर्फ क्षत्री कहा जाता है। सूर्य वंशी में भी पास आनर सिर्फ 8 होते है। बीच में एक है वो तो है एक पढ़ाने वाला टीचर। वो तो है हीं पक्का। बड़ ते बड़ा टीचर कब भी कच्चा या पक्का नहीं बनता। तुम्हारी भी माला ऐसे बनती है। यह पुरानी बाते नहीं है। ऐसे नहीं कि माला को लाखों बर्स हुए है। कहेगे कि 5000 बर्स हुए है। माला भी बनी हुई है। आद मध्य और अन्त को भी तुम बच्चे हीं जानते हो। नया कोई समझ ना सके। अगर सुनाया जाये कि आद को सतयुग कहा जाता है। अब कलियुग है। अभी संगम युग है। अर्थात पुरुषोतम युग आता है। कनिष्ट पुरुषों का पास हो गया। अभी तुम कहेगे सगंमयुग। तुम पावन बन रहे हो। जन्म जन्मान्तर के जो पाप चढ़े है योग बल से वह कटते जाये। तब कर्मातीत अवस्था को पहुचेंगे। यहां बच्चों को सहज सबक मिलता है। बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो। याद करने में हीं मेहनत लगती है। तमों प्रधान बनने में टाईम लगता है। बच्चों को सिखलाया जाता है कि कोई भी करते हुए बुध्दि का योग बाप के साथ हो। बाप इस समय स्वर्ग की स्थापना करते है। वहां आत्मायें पवित्र चाहिये यहां तो पतित है। अजामिल जैसी पाप आत्माओं का भी उधार होना जाता है। इस समय सब तमों प्रधान है। अपने को श्री श्री 108 जगत गुरु कहलाते है। यह सबसे तमों प्रधान है। अपना पार्ट बजाये रहे है। यह भी इन्हों को पता नहीं है कि हम सब पार्ट धारी है। यह बेहद का ड्रामा है। इसमें सभी एक्टर्स को जानना असम्भव है। बुध्दि समझती है कि सब एक्टर्स है। हर एक को अपना अपना पार्ट मिला हुआ है। आत्मायें पार्ट बजाती रहती है। शरीर दूारा भी किसको पता नहीं। कई बहुत बच्चे समझते है कि बाप हमारे अन्दर को जानते है। बाप कहते है कि नहीं। मैं किसको भी कुछ भी नहीं बता सकता। मैं इस काम के लिये नहीं आया हूं। ऐसे नही कि बाबा जानी जानन हार है। हम विकारी है बाबा जानते होंगे। बाप कहते है कि मेरा इन बातों से कोई कनेक्शन नहीं है। तुमको समझाया है कि पवित्र बनना है। कहते भी है कि हम पतित तमों प्रधान है। पुकारते भी है कि हे पतित पावन आवो और आकर रास्ता बताओ। सिज होता है ना। मूंझ पड़ते है। बाप समझाते है भक्ति मार्ग मेंकहते है कि अनेक रास्ते है। यह सब रास्ते भगवान पास जाने के है। बाप कहते कि नहीं। भक्ति मार्ग को दुर्गति मार्ग कहा जाता है। तुम पतित बन जाते हो। जैसे दुबन होते है बड़े। इस दुबन बेड़ी से निकलना है। समझाया जाता है कि बाप को याद करो तो तमों प्रधान से सतो प्रधन बन जावेगे। यहां सिर्फ एक हीं बात समझाई जाती हैकि आत्मा पतित बनी है। बाप को बुलाते हीं है कि हे पतित पावन आकर हमको पावन दुनियां का रास्ता बताओ। जब तक बाप ना आवे तबतक रास्ता निकाल नहीसकते। बाप आते हीं इसी समय है। ड्रामा में पहले से हीं नूधं है। जैसे बायसकोप शूट किया हुआ हैफिर रिपीट करता हैना। वो है दो घन्टे का यह है 5000बर्स का। याद तो नहीं रहता है। बुलाते है तो पता होना चहियेना। टाईम कितना लगता हैजो ह पावन से पतित बन पड़ते है। यह बाप बैठ समझाते है। सैकन्ड की बात सुनाने लिये कितने चित्र आद बनाने पड़ते है। याद की यात्रा हीं मुख्य है। वो हीं मुख्य है और डिफिकल्ट भी है। घड़ी घड़ी भूल जाते है। समझेगे वो जो पिछाड़ी में याद करते करते पास आनर होते है। माया पर जीत पाने की वीरता दिखलाते है। समझाया जाता है ड्रामा प्लैन अनुसार हर एक पुरुषार्थ करने में बांधा हुआ है। जे पुरुषार्थ करेगे सो ब्राहमण बनेने वाले होगे। ओम का अर्थ हम सो का अर्थ समझाया जाता है। ओम, अहम् आत्मा परम् पिता परमात्मा की सन्तान हैं। हम सो, का अर्थ भी बताया है। मुरली कब भी मिस ना करनी चाहिये। वो जैसे ऐपसेन्ट पड़ जाती है। यह तो बहुत बड़ी गाडली यूनीवर्सिटि है। इसमे मिस ना होना चाहिये। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।